प्रातः क्लास 9/9/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। यह पाठशाला है; परन्तु यहाँ कोई चित्र(अर्थात् देहधारी) को नहीं देखना है। यहाँ देखते बुद्धि उस तरफ जानी है जिसका चित्र नहीं है। स्कूल में बच्चों को अटेन्शन हमेशा टीचर में रहता है क्योंकि वह पढ़ाते हैं। तो जरूर उसका सुनना है। फिर रेसपाण्ड भी करना है। टीचर प्रश्न पूछेगा तो इशारा करेंगे ना मैं बताता हूँ। यहाँ यह है विचित्र स्कूल; क्योंकि विचित्र पढ़ाते हैं। जिसको कोई चित्र नहीं हैं। तो पढ़ाई पर आँखें खोलकर बैठना चाहिए ना। स्कूल में टीचर के सामने कब आँखें बंदकर बैठते हैं क्या? भक्तिमार्ग में हिरे हुए हैं आँखें बन्द कर माला जपने का। साधु लोग भी आँख बन्द कर बैठते हैं। वह तो स्त्री को देखते भी नहीं हैं कि कहाँ चलायमान न हो जावे; परन्तु आजकल जमाना है तमोप्रधान। पुरुषों को पुरुषों में भी चलायमान होते हैं। पुरुष पुरुषों में भी क्रिमनल आई रखते हैं। बाप के पास तो सभी समाचार आते हैं ना। बाप तुम बच्चों को समझाते हैं यहाँ तुम भल देखते हो शरीर को; परन्तु बुद्धि उस विचित्र को याद करने में रहती है। ऐसा कोई साधु–सन्त नहीं होगा जो यह शिक्षा दे कि तुम बाप को याद करो। एक तो वह बच्चे2 कब कह न सकेंगे और ऐसे भी नहीं होगा कि जो शरीर को देखते हुए याद उस विचित्र को करे। तुम जानते हो इस रथ में बाबा हमको पढ़ाते हैं। वह बोलते हैं। करती तो सभी कुछ आत्मा है ना। शरीर तो कुछ नहीं करता। आत्मा सुनती है। रूहानी ज्ञान वा जिस्मानी ज्ञान सुनती सुनाती आत्मा है। आत्मा जिस्मानी टीचर बनती है शरीर द्वारा। जिस्मानी बच्चे पढ़ते हैं। संस्कार अच्छे वा बुरे आत्मा ही धारण करती है। शरीर तो राख हो जाता है। यह भी कोई नहीं जानते हैं। उन्हों को तो देहाभिमान रहता है मैं फलाना हूँ। मैं प्राइम मिनिस्टर हूँ। ऐसे नहीं कहेंगे कि मुझ आत्मा ने यह प्राइम मिनिस्टर का शरीर लिया है। यह अभी तुम समझते हो सभी कुछ आत्मा ही करती है। आत्मा अविनाशी है। शरीर सिर्फ यहाँ पार्ट बजाने लिए मिला है। उसमें अगर आत्मा न होती तो शरीर कुछ भी कर न सके। आत्मा शरीर से निकल जाती है तो जैसे एक लोथ पड़ी रहती है। आत्मा को इन आँखों से देख नहीं सकते। वह तो सूक्ष्म है ना। तो बाप कहते हैं बुद्धि से याद परमपिता परमात्मा को करना है। तुम्हारी बुद्धि में है हमको परमपिता परमात्मा पढ़ाते हैं इन द्वारा। यह बड़ी सूक्ष्म समझने की बातें हैं। कई तो अच्छी रीति समझते हैं, कई जरा भी नहीं समझते। यह है सिर्फ अलफ बे की बात। अलफ माना भगवान बाबा। सिर्फ भगवान वा ईश्वर कहने से वह बाप का सम्बन्ध नहीं रहता। मनुष्य तो बिल्कुल ही पत्थर बुद्धि हैं ना। मनुष्य होकर रचयिता और रचना के आदि–मध्य–अन्त को नहीं जानते। यह वर्ल्ड की हिस्ट्री जॉगराफी कैसे रिपीट होती है। अभी संगमयुग है यह किसको भी पता नहीं है। तुम समझते हो आगे हम भी नहीं जानते थे। बिल्कुल ही जंगली जनावर थे। बन्दर थे। बाप कुछ भी कहे विकारी हैं, टट्टू हैं, बन्दर हैं। सभी कुछ बाप कह सकते हैं। फिर उनका अर्थ भी समझाते हैं। तुमको यहाँ ज्ञान से श्रृंगारते हैं फिर यहाँ से बाहर जाकर माया के धूर में अपना ज्ञान श्रृंगार बिगार देते हैं। बाप श्रृंगार तो करे; परन्तु अपना पुरुषार्थ भी तो करना चाहिए ना। बाहर जाकर ऐसी बातें करेंगे जैसे कि जंगली जानवर। श्रृंगार जैसे कि हुआ ही नहीं। सभी भूल जाते हैं। लास्ट नम्बर में जो स्टुडेन्ट बैठे रहते हैं उनको पढ़ाई में इतनी दिल नहीं लगती। हाँ फैक्टरी आदि में सर्विस कर साहुकार हो जाते हैं। पढ़ा हुआ कुछ भी नहीं। यह तो बहुत ही ऊँच पढ़ाई है। पढ़ाई बिगर भविष्य ऊँच पद मिल नहीं सकता। यहाँ तो कोई फैक्टरी आदि में बैठ काम नहीं करना है। जिससे धनवान बनना है। यह तो सभी कुछ खलास हो जाना है। साथ चलेगी सिर्फ अविनाशी कमाई। तुमको मालूम है मनुष्य मरते हैं तो ऐसे हाथ खाली। साथ में कुछ भी नहीं ले जाते। तुम्ही हाथ भरतू जावेंगे। इसको ही कहा जाता है सच्ची कमाई। यह सच्ची कमाई तुम्हारी होती है 21 जन्मों के लिए। बेहद का बाप ही सच्ची कमाई कराते है। तुम देखते हो इस चित्र को; परन्तु याद करते हो विचित्र को; क्योंकि तुम भी आत्मा हो। तो आत्मा अपने बाप को ही देखती है। उनसे पढ़ती है। आत्मा को और परमात्मा को तुम देखते नहीं हो; परन्तु बुद्धि से जानते हो हम आत्मा अविनाशी हैं यह शरीर विनाशी है। तो बाप भी भल सामने तुम बच्चों को देखते हैं परन्तु बुद्धि में

है कि हम आत्माओं को समझाते हैं। वह साधु–सन्त आदि लोग तो जो सिखलाते हैं वह है झूठ। सच की रत्ती नहीं। अभी बाप जो सिखलाते हैं वह है सच ही सच। झूठ की रत्ती नहीं। तुम सच खण्ड के मालिक बनते हो। यह है झूठ खण्ड। सच खण्ड सतयुग, झूठ खण्ड कलियुग। रात–दिन का फर्क है। सतयुग में दुख की बात नहीं। नाम ही है सुखधाम। उस सुखधाम के मालिक तो बेहद के बाप ही बनावेंगे ना। उनका कोई चित्र नहीं। और सभी (के) चित्र हैं। उनकी आत्मा का नाम फिरता है क्या। उनको कहा जाता है परमपिता परमात्मा। उनका नाम ही शिव है। और सभी को आत्मा ही आत्मा कहते। बाकी शरीर का नाम पड़ता है। शिवलिंग है निराकार। उनको भी कहेंगे शिव बाबा। ज्ञान का सागर शान्ति का सागर.....यह शिवबाबा की ही महिमा है। वह बाप है तो बाप से जरूर वरसा मिलना है। रचना को रचना से वरसा नहीं मिलता। रचयिता ही वरसा देंगे अपने बच्चों को। अपने बच्चे होते भाई के बच्चे को वरसा देंगे क्या? यह भी बेहद का बाप बेहद के बच्चों को वरसा देते हैं। यह पढ़ाई है ना। जैसे उस पढ़ाई से मनुष्य से बैरीस्टर, इंजीनियर आदि बनते हैं। पढ़ाने वाले से और पढ़ाई से योग होता है। यह तो पढ़ाने वाला है विचित्र। तुम आत्माएँ भी हो विचित्र। बाप कहते हैं मैं आत्माओं को पढ़ाता हूँ। तुम भी समझो हमको बाप पढ़ाते हैं। एक ही बार बाप आकर पढ़ाते हैं। पढ़ती तो आत्मा है ना। दुख–सुख आत्मा भोगती है; परन्तु शरीर द्वारा। शरीर है तो चोट फील होती है। आत्मा निकल जाये तो फिर शरीर को कितना भी मारो जैसे कि मिट्टी को मारते हो। तो बाप बार2 समझाते हैं अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। वही पतित पावन है। यह तो बाबा जानते हैं नम्बरवार धारण करते हैं। कोई तो बिल्कुल जैसे कि पत्थर बुद्धि हैं। कुछ भी नहीं समझते हैं। ज्ञान तो बड़ा सहज है। अंधा, लूला–लंगड़ा भी समझ सकते हैं; क्योंकि यह तो आत्मा को समझाया जाता है ना। आत्मा लूले लंगड़े नहीं होती। शरीर होता है; परन्तु अपन को आत्मा समझते नहीं हैं। बाप कितना अच्छी रीत बैठ समझाते हैं; परन्तु भक्तिमार्ग की आदत आँखें बन्द कर बैठने की पड़ी हुई है तो यहाँ भी आँखें बन्द कर बैठते। जैसे मतवाला। बाप कहते हैं आँखें बन्द न करो। सामने देखते हुए बुद्धि से बाप को याद करो तब ही विकर्म विनाश होंगे। कितना सहज है। फिर भी कहते हैं बाबा हम याद नहीं कर सकते हैं। अरे लौकिक बाप जिससे हद का वरसा मिलता है उनको तो मरने तक भी याद करते। यह तो सभी आत्माओं का बेहद का बाप है उनको तो तुम याद नहीं करते हो। जिस बाप को बुलाते भी हो ओ गॉड फादर। गाइड मी। वास्तव में यह भी रांग है। बाप जरूर एक का तो नहीं होगा ना। वह तो बेहद का गाइड है। कहते हैं ओ गाड फादर लिबरेट मी। गाइड मी। एक को आकर लिबरेट करेंगे? बाप कहते हैं मैं सभी की आकर सद्गति करता हूँ। मैं आया ही हूँ सबको शान्तिधाम भेज देने। यहाँ मांगने की दरकार ही नहीं। बेहद के बाप है ना। वह तो हद में आकर मी मी करते रहते हैं। हे परमात्मा मुझे सुख दो। दुख मिटाओ। हम पापी, नीच हैं। आप रहम करो। बाप कहते हैं मैं बेहद के पुरानी सृष्टि को नई बनाने आता हूँ। नई सृष्टि में देवताएँ रहते हैं। हम हर 5000 वर्ष बाद आता हूँ जबकि तुम पूरे पतित बन जाते हो। यह है ही आसुरी सम्प्रदाय। अकासुर, बकासुर, भस्मासुर कहते हैं ना। बाप कहते हैं जो मनुष्य अपन को ईश्वर कहलाते हैं, पूजा कराते हैं वह बड़े ते बड़े राक्षस हैं। सिर्फ इतना ही नहीं कहते, फिर कह देते ठिक्कर–भित्तर सबमें परमात्मा है। जब ऐसे मूर्ख बन जाते हैं तब मैं आता हूँ। समझाता हूँ तुम कितने मूर्ख बन गये हो। यह साधु–सन्त आदि सभी हैं हठयोगी निवृत्ति मार्ग वाले। वह ज्ञान देंगे ही निवृत्ति मार्ग का। स्त्रियों का तो मुँह भी नहीं देखते। स्त्री जिसका मुँह नहीं देखने चाहते विधवा बनाकर चले जाते हैं, जिनके लिए कहे यह नर्क का द्वार है उन स्त्रियों के ही गुरु बन बैठते। यह शैतानी नहीं तो और क्या है। स्त्री को नागिन कह भागते उनका फिर गुरु बनते, खान–पान खाते, तो उनको क्या कहेंगे। कौन कहता है कि उन्हों ने घर–बार छोड़ा है। बड़े2 फर्स्ट क्लास फ्लैट लेकर स्त्रियों के गुरु बन बैठे हैं। जैसे कि पतियों का पति बन बैठे हैं। माइयाँ उन्हों के पांव धोकर वह अमृत

समझ पीते हैं। इसलिए बाप कहते हैं यह हिरण्यकश्यपु जैसे बड़े2 दैत्य हैं। यह भी तुमको नीचे ही ले जाते हैं। वह सभी हैं गुरु। सद्गुरु तो एक ही है सच बोलने वाला। वह ही बाप भी है, टीचर भी है, सद्गुरु भी है। अब तुम तो उन गुरुओं से बच गये हो। अभी तुम यह काम नहीं करेंगे। सन्यासी तो माताओं का कितना तिरस्कार करते हैं। बाप कहते हैं यह माताएँ ही स्वर्ग के गेट्स खोलने वाली हैं। लिखा हुआ भी है गेट वे टू हेविन; परन्तु यह भी मनुष्य थोड़े ही समझ सकते हैं। नर्क में पड़े हैं ना। तब तो बुलाते हैं। अभी तुम समझते हो बाबा आकर हमको स्वर्ग में जाने का रास्ता बताते हैं। बाप कहते हैं मैं आता ही हूँ पतितों को पावन बनाने। अभी अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो तो तुम्हारे पाप कट जावेंगे। सभी को एक ही बात बताओ। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। सन्यासी उदासी ऐसे कब कहेंगे क्या हमने घर बार छोड़ फिर हम यह क्या करते हैं। पहले2 जब भीख मांगने आते थे तो आँखें नीचे कर सिर्फ कहते थे माता भिक्षा। बस। ऐसे कि माताएँ फिर पैर धो चूमे क्या यह भी है। माताओं से यह काम कराना होता है। इसलिए मम्मा ने इन सभी को लिखा था यह श्री–2 108 जगद्गुरु कहलाते हैं, अब वास्तव में जगत अर्थात् सारी दुनिया हो गई। कहते हैं ना माया पर जीते जीत। अभी तुम सभी को जगतजीत विश्व का मालिक बनने रास्ता बताते हो। फिर लक्ष्मी की दीपमाला पर पूजा करते हैं उनसे धन मांगते हैं। ऐसे नहीं कहेंगे हेल्थ दो, आयु बड़ी करो। तुम तो बाप से वरसा लेते हो। आयु कितनी बड़ी हो जाती है। यह हेल्थ वेल्थ हैपीनेस सभी दे देते हैं। वह तो लक्ष्मी से सिर्फ ठिक्करियाँ (धन) मांगते हैं। वह भी मिलती थोड़े ही है। यह एक आदत पड़ गई है। देवियों के आगे जावेंगे भीख मांगने। यहाँ तो तुमको बाप से कुछ भी मांगना न है। तुमको तो बाप कहते हैं मामेकम् याद करने से तुम मालिक बन जावेंगे और सृष्टि चक्र को जानने से चक्रवर्ती राजा बन जावेंगे। दैवीगुण भी धारण करनी है। इसमें कुछ बोलने की भी दरकार नहीं रहती। जब कि बाप से स्वर्ग का वरसा मिलता है। अभी तुम इनकी पूजा करेंगे क्या? तुम जानते हो हम तो खुद यह बनते हैं। फिर इन 5 तत्वों की पूजा करेंगे? हमको विश्व की बादशाही मिलती है तो यह पूजा आदि क्या करेंगे। अभी तुम मंदिर आदि में भी नहीं जावेंगे। तुम जानते हो शास्त्रों आदि में सब है झूठ। बाप की भी कितनी ग्लानि कर दी है। ऋषि से बच्चे हुए। फिर लव–कुश बाप से लड़ा.....तो यहाँ भी देखो बच्चे बाप से लड़ने लग पड़ते। यह किचड़ा शास्त्रों से निकला है। कहते हैं द्रौपदी को 5 पति थे। अभी हिन्दू नारी तो एक ही पति करती, सारी आयु विधवा रहती और फिर द्रौपदी के लिए कहते 5 पति थे। तो यहाँ भी चक्राता तरफ 5 पति करते हैं। यह सब किचड़ा शास्त्रों से निकला है ना। तब बाप कहते हैं यह सभी भक्तिमार्ग की सामग्री है। ज्ञान में तो एक अक्षर। मामेकम् याद करो। बस। याद से तुम्हारे पाप कट जावेंगे। सतोप्रधान बन जावेंगे। तुम ही सतोप्रधान सर्वगुण सम्पन्न.....थे। फिर बनना पड़े। यह भी समझते नहीं। पत्थर बुद्धि से बाप को कितना माथा मारना पड़ता है। यह निश्चय होना चाहिए यह बातें कोई भी साधु–सन्त आदि बता न सके। सिवाय एक ईश्वर के। यह कोई ईश्वर थोड़े ही हैं। यह तो बहुत जन्मों के अन्त में है। मैं प्रवेश ही इनमें करता हूँ। जिसने पूरे 84 जन्म लिये हैं। गांवड़े का छोरा था। फिर श्याम से सुन्दर बनते हैं। यह तो पूरा गांवड़े का छोरा था। फिर जब कुछ साधारण बना तो बाबा ने प्रवेश किया; क्योंकि इतनी भट्ठी बनेगी, इन्हों को खिलावेगा कौन। तो जरूर साधारण भी चाहिए ना। यह सब समझने की बातें हैं। बाप खुद कहते हैं मैं इनके बहुत जन्मों के अन्त में प्रवेश करता हूँ। जो सभी से पतित बना है फिर पावन भी वही बनेगा। 84 जन्म पूरा इसने ही लिया है। तत त्वम। एक तो नहीं। बहुत हैं ना। सूर्यवंशी–चन्द्रवंशी बनने वाले ही यहाँ आते हैं नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। बाकी ठहर न सकेंगे। देरी से आने वाले ज्ञान भी थोड़ा लेंगे। फिर देरी से ही आवेंगे। अच्छा मीठे–2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का यादप्यार गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

–: शिवबाबा और स्वर्ग की बादशाही याद है? :–